

अशोक महान का भारतीय इतिहास में योगदान

डॉ नीलम सोनी

असिस्टेंट प्रोफेसर -इतिहास

रामसहाय राजकीय महाविद्यालय बैरी शिवराजपुर कानपुर नगर

सार

सम्राट अशोक (लगभग 268-232 ईसा पूर्व) को भारतीय इतिहास में अक्सर उस शासक के रूप में याद किये जाते हैं जिसने तलवार छोड़कर शांति का रास्ता चुना। यह लेख अशोक के योगदान को उनके अपने शिलालेखों और प्राचीन बौद्ध परंपरा के सहारे परखता है। इसमें चार सवालों पर बात की गई है। अशोक के बारे में हमारी जानकारी कहाँ से आती है और उन स्रोतों की सीमाएँ क्या हैं? कलिंग युद्ध के बाद उनकी सोच में क्या बदला और धम्म असल में क्या था? प्रशासन, लोक कल्याण, कला और स्थापत्य में उन्होंने ठोस रूप से क्या किया? और उनकी विरासत आज किस रूप में जीवित है? लेख की आधार सामग्री अशोक के चौदह प्रमुख शिलालेख, सात स्तंभ लेख, श्रीलंका की बौद्ध परंपरा और आधुनिक इतिहासकारों के शोध हैं। इन्हें साथ रखकर पढ़ने पर एक ज्यादा संतुलित तस्वीर उभरती है, जिसमें अशोक न देवता हैं और न केवल एक भावुक राजा। विश्लेषण बताता है कि अशोक का धम्म किसी एक मत का प्रचार नहीं था। वह नैतिक आचरण, सब संप्रदायों के आदर और प्रजा के प्रति राजा की जिम्मेदारी का एक सार्वजनिक अभियान था। उन्होंने पत्थर पर लिखे आदेशों के जरिए सीधे जनता से बात करने की नई परंपरा डाली। सड़कों के किनारे कुएँ और छायादार पेड़ लगवाए, इंसानों और पशुओं के इलाज का इंतजाम कराया और बौद्ध धर्म को भारत की सीमाओं के पार पहुँचाने का मौका दिया। फिर भी इतिहासकार उनकी सफलता पर एकमत नहीं हैं।

मुख्य शब्द: अशोक, मौर्य साम्राज्य, धम्म, कलिंग युद्ध, शिलालेख, बौद्ध धर्म

1. परिचय

अशोक मौर्य वंश के तीसरे शासक थे। उनके दादा चंद्रगुप्त ने नंद साम्राज्य की जगह मौर्य साम्राज्य खड़ा किया था, और पिता बिंदुसार ने उसे दक्षिण की ओर बढ़ाया। अशोक के समय तक यह साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान के कंधार से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैल चुका था। इतने बड़े भूभाग को चलाना आसान काम नहीं था। संचार के साधन सीमित थे, भाषाएँ अलग थीं, और लोगों की आस्थाएँ भी एक जैसी नहीं थीं। अशोक का असली योगदान इसी उलझन से निपटने के तरीके में दिखता है।

एक छोटी-सी बात नाम की। शिलालेखों में राजा खुद को ज्यादातर 'देवानापिय पियदसि' कहता है, यानी देवताओं का प्रिय और प्रियदर्शी। 'अशोक' नाम तो बहुत कम लेखों में सीधे आता है। कर्नाटक के मस्की में 1915 में मिले लेख में राजा ने अपना नाम खुद लिखा, और तब जाकर पियदसि और अशोक की पहचान पर सीधी मुहर लगी।

2. अशोक को हम कैसे जानते हैं

2.1 पत्थर पर लिखा इतिहास

अशोक की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे अपनी बात खुद कहते हैं। प्राचीन भारत के बहुत कम राजा ऐसे हैं जिनके शब्द हमें सीधे मिलते हैं। अशोक के लेख चट्टानों, पत्थर के स्तंभों और गुफाओं की दीवारों पर मिलते हैं। इनमें चौदह प्रमुख शिलालेख हैं, कलिंग के लिए अलग से जारी दो लेख हैं, सात प्रमुख स्तंभ लेख हैं और कई लघु लेख हैं। नीचे दी गई तालिका में उनका संक्षिप्त ब्योरा है।

तालिका 1: अशोक के अभिलेखों के प्रमुख प्रकार

अभिलेख का प्रकार	संख्या	लिपि और भाषा	मुख्य विषय
प्रमुख शिलालेख	14	मुख्यतः ब्राह्मी में प्राकृत, उत्तर-पश्चिम में खरोष्ठी	धम्म, पशु-रक्षा, लोक कल्याण, कलिंग का पश्चाताप
पृथक कलिंग शिलालेख	2	ब्राह्मी, प्राकृत	कलिंग के अधिकारियों को निर्देश, प्रजा को संतान मानना
प्रमुख स्तंभ लेख	7	ब्राह्मी, प्राकृत	धम्म के नियम, जीव-रक्षा, राजुकों की भूमिका
लघु शिलालेख	कई स्थलों पर	ब्राह्मी, खरोष्ठी	अशोक का उपासक जीवन, धम्म का आरंभिक संदेश
कंधार का द्विभाषी लेख	1 (1958 में प्रकाशित)	यूनानी और अरामाई	धम्म का संदेश

इन लेखों की भाषा आम बोलचाल की प्राकृत है, संस्कृत नहीं। यह फैसला सोच-समझकर लिया गया लगता है। राजा चाहता था कि उसकी बात सुनने वाले हर आदमी तक पहुँचे। ज्यादातर लेख ब्राह्मी लिपि में हैं, पर उत्तर-पश्चिम के शाहबाजगढ़ी और मानसेहरा में खरोष्ठी इस्तेमाल हुई, और अफगानिस्तान के कंधार में यूनानी और अरामाई भाषा में लेख मिले। एक राजा का अपनी प्रजा की अलग-अलग भाषाओं में बात करना उस दौर में कितना अनोखा रहा होगा, इसकी कल्पना कीजिए।

2.2 बौद्ध परंपरा और उसकी सीमाएँ

लेखों के अलावा हमारे पास श्रीलंका के पालि ग्रंथ दीपवंस और महावंस हैं, और उत्तर भारत की संस्कृत परंपरा का अशोकावदान है। इन ग्रंथों में अशोक एक आदर्श बौद्ध राजा हैं। महावंस के अनुसार उन्होंने सत्ता पाने के लिए अपने निन्यानवे भाइयों को मरवा दिया, पर बाद में बौद्ध बनकर पूरी तरह बदल गए। अशोकावदान में चौरासी हजार स्तूपों की कथा है। कहानियाँ रोचक हैं, पर इन्हें इतिहास की तरह नहीं, भक्ति-साहित्य की तरह पढ़ना चाहिए।

यहाँ एक दिलचस्प टकराव दिखता है। पाँचवें शिलालेख में अशोक अपने भाइयों और बहनों के परिवारों का जिक्र ऐसे करते हैं जैसे वे जीवित और राज्य के काम में शामिल हों। अगर राजा ने सारे भाइयों का कत्ल करा दिया

होता, तो यह बात अटपटी लगती। इसलिए रोमिला थापर जैसे इतिहासकार निन्यानवे भाइयों की कथा को अतिशयोक्ति मानते हैं, हालाँकि उत्तराधिकार का संघर्ष हुआ होगा, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

3. आरंभिक जीवन और सत्ता का रास्ता

3.1 राजकुमार से उप-राजा

बौद्ध ग्रंथों के मुताबिक अशोक बिंदुसार के पुत्र थे और उनकी माता का नाम सुभद्रांगी या धम्ममा बताया जाता है। नाम को लेकर परंपराएँ एकमत नहीं हैं, इसलिए इसे पक्का तथ्य मानना ठीक नहीं होगा। जो बात ज्यादा भरोसेमंद है, वह यह कि युवावस्था में उन्हें प्रशासन की जिम्मेदारी दी गई। परंपरा बताती है कि वे उज्जैन के प्रशासक रहे और तक्षशिला में विद्रोह दबाने भेजे गए। यानी सम्राट बनने से पहले उन्होंने सीमांत इलाकों की कठिनाइयाँ खुद देखी थीं।

परंपराओं के मुताबिक बिंदुसार की मृत्यु के बाद सत्ता के लिए संघर्ष हुआ। कुछ विद्वान अभिषेक से पहले लगभग चार साल के अंतर की बात करते हैं, यानी लगभग 273 ईसा पूर्व में सत्ता और 269-268 ईसा पूर्व के आसपास अभिषेक। तिथियों पर थोड़ा मतभेद है, पर शासन करीब छत्तीस-सैंतीस साल चला और ईसा पूर्व 232 के आसपास खत्म हुआ।

अशोक के निजी जीवन की झलक एक अनोखे लेख में मिलती है, जिसे रानी का लेख कहा जाता है। यह इलाहाबाद-कौशांबी स्तंभ पर है और इसमें अशोक की दूसरी रानी कारुवाकी के दान का जिक्र है, जिन्हें तीवर की माता कहा गया है। प्राचीन भारत के किसी राजा के घर की ऐसी झलक बहुत कम मिलती है।

4. कलिंग युद्ध और मन का बदलाव

4.1 तेरहवाँ शिलालेख क्या कहता है

कलिंग यानी आज के ओडिशा और उसके आसपास का इलाका। अशोक ने अपने अभिषेक के आठवें साल इसे जीता। यह जानकारी हमें किसी दरबारी कवि से नहीं, खुद अशोक से मिलती है। तेरहवें शिलालेख में वे लिखते हैं कि कलिंग विजय में डेढ़ लाख लोग बंदी बनाकर निकाले गए, एक लाख मारे गए और इससे कई गुना ज्यादा लोग मर गए। ये संख्याएँ राजा के अपने बयान की हैं, कोई आधुनिक गणना नहीं, पर इनसे युद्ध की भयावहता का अंदाज़ा मिलता है।

इस शिलालेख की असली ताकत आँकड़ों में नहीं, राजा के पश्चाताप में है। अशोक कहते हैं कि कलिंग विजय के बाद उन्हें गहरा अफसोस हुआ, क्योंकि जब किसी स्वतंत्र देश को जीता जाता है तो वहाँ हत्या, मृत्यु और लोगों का निर्वासन होता है, और यह बात उन्हें बहुत पीड़ा देती है। प्राचीन दुनिया के राजकीय लेखों में ऐसा स्वर कम ही सुनाई देता है।

4.2 क्या सब कुछ एक रात में बदल गया?

कलिंग के बाद अशोक की दिनचर्या भी बदली। आठवें शिलालेख के अनुसार पहले के राजा विहार-यात्राओं पर निकलते थे, जिनमें शिकार और आमोद-प्रमोद होता था। अशोक ने अभिषेक के दसवें साल संबोधि, यानी बोधगया की यात्रा की, और तब से उनकी यात्राएँ धम्म-यात्राएँ बन गईं, जिनमें वे ब्राह्मणों और श्रमणों से मिलते, बुजुर्गों को दान देते और ग्रामीण जनता से धम्म पर चर्चा करते। राजा का सड़कों पर निकलना अब दिखावे के बजाय संवाद का जरिया बन गया था।

फिर भी कलिंग का असर छोटा नहीं था। तेरहवें शिलालेख के मुताबिक अशोक ने अब असली विजय उसे माना जो धम्म से हासिल हो, जिसे उन्होंने धम्म-विजय कहा। उन्होंने बताया कि यह विजय उनके अपने राज्य में

भी हुई और सीमा के पार छह सौ योजन तक भी, जहाँ यूनानी राजा अंतियोक रहता था, और उसके आगे के चार राजा तुरमय, अंतिकिन, मग और अलिकसुदर भी आते थे। कुछ इतिहासकार इन नामों को सेल्यूकिड-सीरिया के अंतियोकस द्वितीय, मिस्र के टॉलेमी द्वितीय, मैसेडोन के एंटिगोनस गोनातास, साइरीन के मगस और एपिरस के अलेक्जेंडर से जोड़ते हैं।

5. धम्म: एक नई सोच

5.1 धम्म क्या था

'धम्म' शब्द सुनकर हम अक्सर 'धर्म' या 'बौद्ध धर्म' समझ लेते हैं। यही गलती होती है। अशोक के लेखों में धम्म एक पंथ नहीं, जीने का तरीका है। उसमें बड़ों का आदर, छोटों से अच्छा व्यवहार, दान, सच बोलना, जीवों पर दया, दासों और नौकरों के साथ मानवीय बर्ताव और ब्राह्मणों व श्रमणों का सम्मान शामिल है। स्तंभ लेखों में यह सूची कई रूपों में दोहराई गई है। चौदहवें शिलालेख में अशोक बताते हैं कि यह सब इसलिए खुदवाया गया कि लोग इस पर चलें और यह स्थायी रहे।

5.2 हर मत का सम्मान

बारहवाँ शिलालेख मेरी नजर में अशोक के लेखों का सबसे आधुनिक हिस्सा है। उसमें राजा कहता है कि जो अपने संप्रदाय की प्रशंसा करते हुए दूसरों की निंदा करता है, वह असल में अपने ही संप्रदाय को चोट पहुँचाता है। इसलिए मेल-जोल अच्छा है, ताकि लोग एक-दूसरे के धम्म को सुनें और उसका आदर करें। अमर्त्य सेन ने भारत की सहिष्णुता की लंबी परंपरा के संदर्भ में इसी विचार को अशोक की देन बताया है।

सोचिए, लगभग सवा दो हजार साल पहले का एक सम्राट, जिसके पास सेना है, खजाना है और ऐसे अधिकारी हैं जो उसका हर आदेश मानेंगे। वह अपनी ताकत का इस्तेमाल किसी एक मत को थोपने में नहीं करता। इसके उलट, वह साफ कहता है कि हर मत का सार बढ़े, यानी वाणी पर संयम रहे। कितने शासक आज भी यह कह पाते हैं?

6. प्रशासन और लोक कल्याण

6.1 प्रजा से सीधा रिश्ता

अशोक के प्रशासन की सबसे दिलचस्प बात उनका यह दावा है कि राजा का कर्तव्य प्रजा का ऋण चुकाना है। छठे शिलालेख में वे कहते हैं कि वे हर समय, चाहे भोजन कर रहे हों या अंतःपुर में हों, प्रजा के काम की खबर सुनने को तैयार हैं। उनका कहना है कि सब लोगों का हित करना उनका सबसे बड़ा कर्तव्य है, और यह कर्तव्य परिश्रम और काम को तुरंत निपटाने से पूरा होता है। एक आदर्शवादी घोषणा लग सकती है, पर इसके पीछे एक पूरा तंत्र खड़ा किया गया था।

इस तंत्र के दो नाम सबसे चर्चित हैं। पहले, धम्म-महामात्र। पाँचवें शिलालेख के अनुसार अशोक ने अपने अभिषेक के तेरहवें साल इन अधिकारियों की नियुक्ति की, जिनका काम विभिन्न संप्रदायों के बीच धम्म की स्थापना, कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार और बूढ़ों व ज़रूरतमंदों की देखभाल करना था। दूसरे, राजुक। चौथे स्तंभ लेख में अशोक कहते हैं कि उन्होंने राजुकों को लाखों लोगों पर नियुक्त किया है और उन्हें इनाम व दंड देने की स्वतंत्रता दी है, ताकि वे बिना डरे अपना काम कर सकें।

6.2 सड़कें, कुएँ और दवाइयाँ

लोक कल्याण के मामले में दूसरा शिलालेख बहुत ठोस है। अशोक कहते हैं कि उन्होंने अपने राज्य और सीमावर्ती राज्यों, यहाँ तक कि चोल, पांड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र और ताम्रपर्णी तक, मनुष्यों और पशुओं के

इलाज की दो तरह की व्यवस्था की। जहाँ औषधियाँ नहीं थीं, वहाँ मँगवाकर लगवाईं। सड़कों के किनारे पेड़ लगवाए और कुएँ खुदवाए। सातवें स्तंभ लेख में वे यही बात दोहराते हैं, और बताते हैं कि हर आठ कोस पर कुएँ खुदवाए गए और आम के बाग लगवाए गए, ताकि इंसानों और जानवरों को आराम मिले।

मेरे लिए सबसे उल्लेखनीय बात इसमें पशुओं की चिंता है। पाँचवें स्तंभ लेख में अशोक ने कुछ पक्षियों और जानवरों की हत्या पर रोक लगाई और कुछ तय तिथियों पर पशु-वध बंद रखने का आदेश दिया। पहले शिलालेख में वे बताते हैं कि पहले उनकी रसोई में रोज़ सैकड़ों-हजारों जानवर मारे जाते थे, पर अब सिर्फ़ तीन, दो मोर और एक हिरण, और आगे चलकर वे तीन भी नहीं मारे जाएँगे। यह उस दौर के राजदरबार के लिए छोटी बात नहीं थी, जहाँ भोज अक्सर शक्ति-प्रदर्शन का हिस्सा होते थे।

6.3 न्याय में नरमी

न्याय में भी वही नरमी दिखती है। चौथे स्तंभ लेख में अशोक मृत्युदंड पाए कैदियों को तीन दिन की मोहलत देते हैं, ताकि उनके रिश्तेदार अपील कर सकें या वे परलोक के लिए दान और उपवास कर सकें। ध्यान रहे, अशोक ने मृत्युदंड खत्म नहीं किया। उन्होंने उसमें थोड़ा समय और थोड़ी दया जोड़ी। इतिहास में असली बदलाव अक्सर इसी तरह के छोटे कदमों से आते हैं, घोषणाओं से नहीं।

7. बौद्ध धर्म का प्रसार और बाहरी दुनिया

7.1 धम्म-दूत और तीसरी संगीति

अशोक व्यक्तिगत रूप से बौद्ध उपासक बने, यह उनके अपने लेखों से सिद्ध है। पर बौद्ध धर्म को दुनिया तक ले जाने में उनकी भूमिका कितनी थी, यह सवाल थोड़ा जटिल है। श्रीलंकाई ग्रंथों के अनुसार पाटलिपुत्र में मोग्गलिपुत्र तिस्स की अध्यक्षता में तीसरी बौद्ध संगीति हुई और उसके बाद अलग-अलग दिशाओं में प्रचारक भेजे गए। इन दूतों की सूची में गांधार-कश्मीर, महाराष्ट्र, सुवर्णभूमि और श्रीलंका जैसे इलाके हैं।

इनमें सबसे मशहूर नाम महेंद्र का है, जिन्हें परंपरा अशोक का पुत्र और संघमित्रा को पुत्री बताती है। दोनों श्रीलंका गए, जहाँ राजा देवानापिय तिस्स ने बौद्ध धर्म अपनाया। इस कथा की पुष्टि अशोक के अपने लेखों से नहीं होती, पर साँची के स्तूप में मिले अस्थि-पात्रों पर प्रचारकों के नाम खुदे हैं, जो महावंस में दर्ज कुछ नामों से मेल खाते हैं। यानी परंपरा पूरी तरह कल्पना नहीं है।

7.2 सीमाओं के पार

अशोक का बाहरी दुनिया से रिश्ता सिर्फ़ धार्मिक नहीं था। तेरहवें शिलालेख में पाँच यूनानी राजाओं के नाम हैं, जिनके राज्यों तक धम्म के पहुँचने की बात अशोक करते हैं। कंधार में मिले यूनानी लेख में 'यूसेबिया' शब्द आता है, यानी धर्मनिष्ठा, जो धम्म का अनुवाद लगता है। अशोक के अभिलेख कंधार से कर्नाटक तक, यानी साम्राज्य के लगभग हर कोने में मिलते हैं, और इससे उनकी पहुँच का अंदाज़ा होता है।

इतिहासकार यह भी पूछते हैं कि क्या अशोक ने श्रीलंका, सुवर्णभूमि और पश्चिम तक प्रचारक वास्तव में भेजे थे, या यह बाद के भिक्षुओं की गढ़ी हुई कहानी है। गोम्ब्रिच का श्रीलंकाई बौद्ध परंपरा का सामाजिक इतिहास अशोक के राजकीय संरक्षण का जिक्र बार-बार करता है। मेरी राय में सच शायद बीच में है। अशोक ने बौद्ध धर्म को अकेले नहीं फैलाया, पर उसे राजकीय संरक्षण और रास्ते दिए। इतिहास में अक्सर यही सबसे बड़ा फर्क बनता है।

8. कला और स्थापत्य

8.1 स्तंभ, गुफाएँ और स्तूप

पत्थर के प्रति अशोक का लगाव सिर्फ लिखने तक सीमित नहीं था। मौर्य काल में बड़े पैमाने पर पत्थर की कलात्मक तराशी दिखाई देने लगी। चुनार के बलुआ पत्थर के पॉलिश किए चमकदार स्तंभ अशोक के काल की पहचान हैं, जिनके शीर्ष पर शेर, बैल या हाथी की आकृतियाँ बनी हैं। सारनाथ का सिंह-शीर्ष इनमें सबसे प्रसिद्ध है, जिसमें चार शेर पीठ से पीठ सटाकर बैठे हैं और नीचे फलक पर चक्र तथा चार पशु बने हैं।

बिहार के बराबर पहाड़ियों में अशोक ने आजीविक संप्रदाय के साधुओं के लिए चट्टान काटकर गुफाएँ बनवाई, जिनकी भीतरी दीवारें आज भी शीशे जैसी चमकती हैं। यह भी ध्यान देने की बात है कि ये गुफाएँ आजीविकों को दी गई, बौद्धों को नहीं। यानी राजा का दान किसी एक संप्रदाय तक बँधा नहीं था। स्तूपों का मामला कुछ अलग है। परंपरा चौरासी हजार स्तूपों की बात करती है, जो शायद अतिशयोक्ति है, पर साँची के महास्तूप का मूल ढाँचा अशोक के समय से जोड़ा जाता है।

8.2 लुंबिनी की एक छोटी-सी घोषणा

लुंबिनी का स्तंभ लेख अशोक की संवेदना का एक छोटा-सा पर मार्मिक उदाहरण है। अभिषेक के बीसवें साल अशोक वहाँ गए और बुद्ध के जन्मस्थान की पूजा की। उन्होंने लुंबिनी गाँव को बलि नामक कर से मुक्त किया और अनाज का हिस्सा घटाकर आठवाँ भाग कर दिया। एक तीर्थस्थल पर श्रद्धा और स्थानीय लोगों की राहत, दोनों का ऐसा संयोग कम मिलता है।

9. आलोचना और बहस

9.1 क्या धम्म सफल रहा?

अब असहज सवाल। क्या अशोक का धम्म सचमुच सफल रहा? साम्राज्य अशोक के जाने के लगभग पाँच दशक के भीतर बिखरने लगा और अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को लगभग 185 ईसा पूर्व में उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने हटा दिया। कुछ पुराने इतिहासकारों ने इसका दोष अशोक की अहिंसा-नीति पर डाला, यह कहकर कि उसने साम्राज्य को कमजोर बना दिया। थापर इस तर्क को नहीं मानती। उनके अनुसार पतन के कारण प्रशासनिक और आर्थिक थे, और अत्यधिक केंद्रीकृत व्यवस्था उत्तराधिकारियों के हाथ में टिक न सकी।

9.2 आदर्शवाद या राजनीति?

दूसरा सवाल अशोक की मंशा का है। कुछ विद्वान उन्हें सच्चा नैतिक सुधारक मानते हैं। कुछ कहते हैं कि धम्म एक कुशल राजनीतिक रणनीति था, जिसने अलग-अलग भाषाओं और आस्थाओं वाले समूहों को एक साझा नैतिक ढाँचे में बाँधा। मेरी समझ में दोनों बातें एक साथ सच हो सकती हैं। इंसान और शासक के बीच की रेखा आज भी इतनी साफ नहीं होती, तब तो और भी नहीं रही होगी।

तेरहवें शिलालेख की एक पंक्ति इस द्वंद को उजागर करती है। अशोक अपने राज्य के जंगली इलाकों में रहने वाले लोगों को चेतावनी देते हैं कि वे अपना आचरण सुधारें, वरना उन पर बल प्रयोग हो सकता है, और साथ ही वे चाहते हैं कि ये लोग मन बदलें। यानी राजा ने हिंसा का विकल्प छोड़ा नहीं था, बस उसे अंतिम उपाय बना दिया था।

9.3 इतिहासलेखन में अशोक

अशोक पर लिखने का अपना इतिहास है। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में डी. आर. भंडारकर और राधाकुमुद मुखर्जी ने उन्हें एक आदर्श नैतिक शासक के रूप में पेश किया। ए. एल. बाशम ने 'द वंडर दैट वाज़ इंडिया' में उन्हें बड़े आदर के साथ प्रस्तुत किया। बाद की पीढ़ी ज्यादा सतर्क हुई। 'रीइमेजिनिंग अशोक' नाम के शोध-संग्रह में विद्वानों ने दिखाया कि अशोक की छवि हर दौर में नए सिरे से गढ़ी गई, कभी बौद्ध भिक्षुओं ने, कभी औपनिवेशिक विद्वानों ने, कभी राष्ट्रवादियों ने। कुल्के और रोदरमुंड की इतिहास-पुस्तक अशोक को मौर्य राज्य-व्यवस्था के बड़े ढाँचे के भीतर रखकर देखती है।

10. अशोक की विरासत

10.1 राष्ट्रीय प्रतीकों में

आज भारत की पहचान में अशोक हर जगह मौजूद हैं। भारत के राष्ट्रीय चिह्न में सारनाथ के सिंह-शीर्ष की आकृति ली गई है, और तिरंगे के बीच का चक्र, जिसमें चौबीस आरे हैं, सारनाथ स्तंभ के धर्मचक्र से लिया गया है। यह चुनाव सोच-समझकर किया गया लगता है। मेरी समझ में स्वतंत्र भारत के निर्माता एक ऐसा प्रतीक चाहते थे जो किसी एक धर्म या क्षेत्र का न होकर साझा नैतिक परंपरा का हो, और अशोक ने ठीक ऐसा ही प्रतीक दिया।

10.2 आज के लिए सवाल

अशोक की विरासत को सिर्फ प्रतीकों में कैद कर देना ठीक नहीं होगा। उनके लेख आज भी कुछ सवाल पूछते हैं। सत्ता क्या जनता के सामने जवाबदेह होनी चाहिए? असहमत पंथों का सम्मान क्या राज्य की ज़िम्मेदारी है? और जीत का मतलब क्या सिर्फ ज़मीन पर कब्ज़ा है? इन सवालों के जवाब देना हर पीढ़ी का काम है। अशोक ने अपने जवाब सवा दो हजार साल से भी पहले पत्थर पर लिखवा दिए थे, और वे जवाब आज भी हमें टोकते हैं।

11. निष्कर्ष

अशोक की कहानी को एक वाक्य में कहना हो, तो वह यह होगी: एक शक्तिशाली राजा ने अपनी ही जीत की कीमत देखी और फिर शासन का तरीका बदलने की कोशिश की। कलिंग का पश्चाताप असली लगता है, यह उनके अपने शब्दों से पता चलता है। लेकिन बदलाव एक रात में नहीं आया, और अशोक ने हिंसा का विकल्प पूरी तरह छोड़ा भी नहीं। उन्होंने उसे अंतिम सहारा बना दिया। यानी अशोक न तो कथा के संत थे, न केवल एक विजेता, बल्कि दोनों के बीच की जटिल सच्चाई थे।

उनका असली योगदान तीन जगह दिखता है। पहला, धम्म। यह किसी पंथ का प्रचार नहीं, सब संप्रदायों के आदर और नैतिक आचरण पर टिकी साझा सोच थी। दूसरा, प्रशासन। धम्म-महामात्र और राजुक जैसे अधिकारी, कुएँ, पेड़, औषधियाँ और पशुओं की रक्षा बताते हैं कि राजा प्रजा के दैनिक जीवन तक पहुँचना चाहता था। तीसरा, संवाद। चट्टानों पर, जनता की अपनी भाषाओं में, एक सम्राट ने अपने फैसलों की सफाई दी। यह पारदर्शिता की एक शुरुआती मिसाल है।

संदर्भ

- [1]. Allen, C. (2012). *Ashoka: The search for India's lost emperor*. Little, Brown.
- [2]. Basham, A. L. (1954). *The wonder that was India*. Sidgwick & Jackson.
- [3]. Bhandarkar, D. R. (1925). *Asoka*. University of Calcutta.
- [4]. Cunningham, A. (1854). *The Bhilsa tope; or, Buddhist monuments of central India*. Smith, Elder and Co.
- [5]. Dhammika, S. (1993). *The edicts of King Asoka: An English rendering*. Buddhist Publication Society.
- [6]. Falk, H. (2006). *Asokan sites and artefacts: A source-book with bibliography*. Philipp von Zabern.

-
- [7]. Geiger, W. (Trans.). (1912). *The Mahāvamsa or the great chronicle of Ceylon*. Pali Text Society.
 - [8]. Gombrich, R. F. (1988). *Theravada Buddhism: A social history from ancient Benares to modern Colombo*. Routledge & Kegan Paul.
 - [9]. Hultzsch, E. (1925). *Inscriptions of Asoka* (Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. 1). Clarendon Press.
 - [10]. Kulke, H., & Rothermund, D. (2004). *A history of India* (4th ed.). Routledge.
 - [11]. Lahiri, N. (2015). *Ashoka in ancient India*. Harvard University Press.
 - [12]. Mookerji, R. (1928). *Asoka*. Macmillan.
 - [13]. Olivelle, P., Leoshko, J., & Ray, H. P. (Eds.). (2012). *Reimagining Asoka: Memory and history*. Oxford University Press.
 - [14]. Schlumberger, D., Robert, L., Dupont-Sommer, A., & Benveniste, É. (1958). Une bilingue gréco-araméenne d'Asoka. *Journal Asiatique*, 246, 1–48.
 - [15]. Sen, A. (2005). *The argumentative Indian: Writings on Indian history, culture and identity*. Allen Lane.
 - [16]. Sharma, R. S. (2005). *India's ancient past*. Oxford University Press.
 - [17]. Sircar, D. C. (1957). *Inscriptions of Asoka*. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India.
 - [18]. Strong, J. S. (1983). *The legend of King Asoka: A study and translation of the Asokāvadāna*. Princeton University Press.
 - [19]. Thapar, R. (1997). *Asoka and the decline of the Mauryas* (Rev. ed.). Oxford University Press. (Original work published 1961)
 - [20]. Thapar, R. (2002). *The Penguin history of early India: From the origins to AD 1300*. Penguin Books.